और उनके द्वारा प्रचालित हैं। सम्पूर्ण माल परिवहन उद्योग भी निजी क्षेत्र में ही है।

(iii) **पत्तन:** बहुत सी सेवायें जैसे स्टीवडोरिंग, कार्गों की क्लियरिंग और फारवर्डिंग, उपस्करों की आपूर्ति, पहले से ही पत्तन क्षेत्र में निजी एजेंसियों के पास हैं। अतिरिक्त सुविधाएं स्थापित करने के लिए निजी सहभागिता की संभावना की भी जांच की जा रही है। तथापि, प्रत्येक प्रस्ताव को उसके गुण-दोषों के आधार पर मंजूरी दी जाएगी।

(iv) **नौवहन और जहाज निर्माण:** जहाज निर्माण और जहाज मरम्मत के उद्योग में निजीकरण को पहले ही अनुमति दी जा चुकी है।

भारतीय नौवहन निगम के मामले में 261.23 करोड़ रु० की 10.34 तक इक्विटी वित्तीय संस्थाओं/म्युचुअल फन्डों को दे दी गई है।

पब्लिक स्कूलों द्वारा दिल्ली परिवहन निगम की बसों का किराये पर लेना

2234. **श्री कपिल वर्मा:**
डा० फागुनी राम:
श्रीमती वीणा वर्मा:

क्या जल-भूतल परिवहन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि दिल्ली परिवहन निगम की बसों को दिल्ली में निजी (पब्लिक) स्कूलों के विद्यार्थियों को लाने-ले-जाने के काम में लगाया गया है; यदि हां, तो ऐसी बसों की संख्या कितनी है;

(ख) इस सेवा के लिए विद्यार्थियों से प्रति माह कितना बस किराया प्रभार लिया जाता है और उक्त किरायों के लिए जाने के क्या आधार हैं;

(ग) इन स्कूलों द्वारा इन बसों का एक वर्ष में कितने दिन प्रयोग किया जाता है और दिल्ली परिवहन निगम को कितने दिन का किराया दिया जाता है; और

(घ) क्या यह भी सच है कि दिल्ली परिवहन निगम को इन स्कूलों में बस लगाने से प्रति माह करोड़ों रुपये घाटा होता है; यदि हां, तो यह घाटा कितना है और इसके क्या कारण हैं?

जल-भूतल परिवहन मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री जगदीश टाइटलर): (क) जी, हां। छात्रों को लाने-ले जाने के लिए विभिन्न स्कूलों को 662 बसें किराए पर दी गई हैं।

(ख) और (ग) छात्रों से कोई मासिक किराया नहीं लिया जा रहा है। दिल्ली परिवहन निगम और स्कूल प्राधिकारियों के साथ हुए करार के अनुसार स्कूल प्राधिकारियों द्वारा दिल्ली परिवहन निगम को प्रचालित कुल किलोमीटर पर 4.50 प्रति किलो मीटर का भुगतान किया जा रहा है। स्कूलों द्वारा एक वर्ष में लगभग 210 दिन के बसों का उपयोग किया जा रहा है।

(घ) स्कूलों द्वारा दिल्ली परिवहन निगम की बसें लिए जाने के कारण जनवरी, 1992 महीने के दौरान दिल्ली परिवहन निगम को लगभग 24 लाख रु० का घाटा हुआ। घाटे का कारण था 4.50 रु० किलोमीटर की दर पर प्रभार लिया जाना, जबकि कुल लागत 7.87 रु० प्रति किलोमीटर आती है।

Reconsideration of Fare Hike by DTC

2235. CHOWDHRY HARI SINGH: Will the Minister of SURFACE TRANSPORT be pleased to state:

(a) whether Government propose to reconsider the recent revision of fares by DTC in view of the recent agitations held against the same;

(b) the number of buses being actually run by DTC to cater to the need of the commuters in Delhi; and

(c) the approximate revenue being earned by the DTC as a result of the recent hike in fares?

THE MINISTER OF STATE OF MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT (SHRI JAGDISH TYTLER) (a) No, Sir.

(b) As on 20-2-1992, DTC had a fleet of 4378 buses.

(c) In January, 1992 DTC earned a revenue of Rs. 1,623.70 lakhs.

STATEMENT BY MINISTER

Correcting the reply given in the Rajya Sabha on the 26th February, 1992 to Unstarred Question 386 regarding increase in fleet of D.T.C.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT (SHRI JAGDISH TYTLER): Mr. Chairman, the English version of the reply to part (d) of Rajya Sabha Unstarred Question No. 386 answered on 26-2-1992 may please be substituted by the following:

> "As on 20-2-1992 DTC had a fleet of 4378 'buses'. There is no proposal to increase the fleet of DTC" [Placed in Library *See* N.L.T. 1526/92]

(The Deputy Chairman in the chair)